मुख़तसर सीरत

हज़रत बन्दगी मियाँ शाह नेमत रज़ी०

ख़लीफ़ए सुव्वम हज़रत इमामुना मीराँ सय्यद मुहम्मद महेदी मौऊद अले०

फ़ारूक़े विलायत

लेखक

श्री शेख़ चाँद साजिद

एम-ए, एम-फ़िल (उस्मानिया)

नाशिर

ग़ुलामाने हज़रत शाहे नेमत रज़ी०

हज़रत इमामुना मीराँ सय्यद मुहम्मद महेदी मौऊद अले०

के तीसरे ख़लीफ़ा **हज़रत बन्दगी मियाँ शाह नेमत रज़ी०**

की

मुख़तसर सीरत

फ़ारुक़े विलायत

लेखक

श्री शेख़ चाँद साजिद

एम-ए, एम-फ़िल (उस्मानिया)

नाशिर

ग़ुलामाने हज़रत शाहे नेमत रज़ी०

तबाअत का साल : शाबानुल - मुअज़्ज़म 1430 हिज्री / 2009

मिलने का पता

इदारतुल इल्म महेदवियह इस्लामिक लाइबरेरी

मर्कज़ी अंजमने महेदवियह बिल्डिंग

चंचलगुडा, हैदारबाद - 500 024 A.P.

بسم الله الرحمن الرحيم

तम्हीद

तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिये सज़ावार है जो ख़ालिक़े काइनात है। दरूद व सलाम ख़ातिमैन अलैहिमस-सलाम पर उनकी आल और अस्हाब पर।

हज़रत इमाम आख़रुज़्ज़माँ सय्यद मुहम्मद महेदी मौऊद अले० के तीसरे ख़लीफ़ा हज़रत बन्दगी मियाँ शाह नेमत रज़ी० की सीरते तय्यबा पर यह मुख़तसर रिसाला **''फ़रुक़े विलायत''** उर्दू भाषा में दूसरी बार हज़रत शाह नेमत रज़ी० के अक़ीदत मन्दों ने ''ग़ुलामाने हज़रत शाहे नेमत रज़ी०'' के नाम से 2008 में शाऐ किया ता। अब उसको हिन्दी लिपि में शाऐ किया जा रहा है। इस से पहले 1412/1992 में 'इदारए ज़ियाउल् मुसद्दिक़ीन' हैदराबाद ने इस रिसाले को हिन्दी भाषा में शाऐ किया था।

इस रिसाले की तालीफ़ में क़ौमी और दूसरी किताबों से मदद् ली गई है और किताब के आख़िर में बाज़ हवाशी (टिप्पणी) भी दिये गये हैं। हज़रत बन्दगी मियाँ शाह नेमत रज़ी० की सीरत, फ़ज़ाइल और बशारतों के ज़िमन में बहुत सी रिवायात क़ौमी किताबों में मौजूद हैं, लेकिन इख़तिसार की ग़रज़ से इस रिसाले में सिर्फ़ चंद रिवायात का ज़िकर किया गया है और पढ़ने वालों की सहूलत के लिये आसान ज़बान में लिखा गया है। इसके लिखने का मक़सद यही है कि पढ़ने वालों के साथ साथ ख़ुद अपने लिये सामाने हिदायत फ़राहम हो सके क्योंकि औलिया अल्लाह के वाक़िआत ईमान को जिला बख़श्ते हैं।

आज कल के हालात में जब कि लोग ख़ासकर नौजवान दीने महेदी से ग़ाफ़िल हैं मज़्हब की तबलीग़-व-इशाअत की हर शहर हर गाँव में सख़्त ज़रूरत है। अल्लाह तआला से दुआ है कि हमें हक़ और बातिल में तमीज़ करने की सलाहियत और तौफ़ीक़ अता फर्माए, दुन्या में हमारा ईमान सलामत रखे और खातिमा भी ईमान पर करे, और उम्मते मुहम्मदी सल्ला० और गिरोहे महेदी अले० के एक हक़ीर ग़ुलाम की हैसियत से इस छोटी सी कोशिष को क़ुबूल फ़र्माए और इस रिसाले की तबाअत का एहतिमाम करने वाले अक़ीदत मन्दाने हज़रत शाह नेमत रज़ी० को अजरे अज़ीम अता फ़र्माए । आमीन ।

22 शाबानुल मुअज़्ज़म 1430 हिज्री/
14 आगस्त 2009

शेख़ चाँद साजिद
अहक़रुल इबाद

ह० शाह नेमत रज़ी० की प्रशंसा में

रूबाइयात

- हज़रत सय्यद बाक़र मंजूर

शहे नेमत का दर क़िब्ला गाहे आरिफाँ देखो,
यक़ीनन् जन्नते अरज़ी है उनका आस्ताँ देखो।
हमारी ख़ूबिए तक़दीर ले आई हमें बाक़र,
सुकूने क़ल्ब का सामां मयस्सर है यहां देखो।

ख़ुदा के ज़िक्र की लज़्ज़त के इस दर से मज़े लूटो,
रसूलुल्लाह की ताअत के इस दर से मज़े लूटो।
वफ़ा का दर्स लेकर आस्ताने शाहे नेमत से,
इमामे पाक की उल्फ़त के इस दर से मज़े लूटो।

रहमते रब का बहाना मिल गया,
बाग़े हक् में आशियाना मिल गया,
शाहे नेमत दर बदर् हम क्यों फिरें,
हमको तेरा आस्ताना मिला गया।

भरम रखा है तू ने हिल्म व सब्र व ज़ब्ते यूसुफ़ का,
ज़माना मोतरफ़ है तेरे रूहानी तसर्रुफ़ का।
कहा महदी ने तुझको नेमते हक़ है शहे नेमत,
तेरा फ़ुक्र व तवक्कुल है वसीला इस तआरूफ़ का।

तालिबे लुत्फ़ो करम हैं हम भी ऐ पर्वरदिगार,
गुल्शने इख़लास में हम सब के आ जाये बहार।
कॉश बर् आए हमारी यह तमन्नाए दिली,
शाहे नेमत के ग़ुलामों में हो अपना भी शुमार।

मन्क़बत्

शाहे नेमत रज़ी० हैं मिक़राज़े बिदअत

- सय्यद दाऊद रफ़ीक़

शाहे नेमत बहारे विलायत
शाहे नेमत निखारे शरीअत
शाहे नेमत हिसारे तरीक़त
शाहे नेमत विक़ारे शहादत — शाहे नेमत हैं मिल्लत की नेमत

महेदी-ए-दीन की पा के सुहबत
धुल गई ज़ात की सब कसाफ़त
फिर फ़ना हो गई ज़ाते नेमत
मिल गई दीदे हक़ की सआदत — शाहे नेमत हुवे जो थे नेमत

है यह फ़र्माने शाहे विलायत
शाहे नेमत हैं मर्दे शुजाअत
दाफ़ए शर बलीयात व आफ़त
दाफ़ए मासियत रस्म व आदत — शाहे नेमत हैं मिक़राज़े विदअत

उनके सांसौं की है ज़िक्र ज़ीनत
उनके दिल में धड़कती शरीअत
उनकी आंखौं में है रब की रूयत
उनके चहरे पे नूरे विलायत — शाहे नेमत सरापा हिदायत

उनका तक़वा ख़ुदा की इताअत
उनकी सीरत मुहम्मद की सुन्नत
उनका ईमान फ़ैज़े विलायत
उनको रब से मिली यह फ़ज़ीलत — शाहे नेमत ने पाई शहादत

उनके दर पर बरस्ती है रहमत
उनके दर पर बदलती है क़िस्मत
उनका दर गुलिस्ताने करामत
बांटते हैं वह फ़ैज़े विलायत शाहे नेमत हैं बहरे सख़ावत
रब ने शैताँ से की है हिफ़ाज़त
हैं वह फ़ारूक़े अहदे विलायत
की अता रब की महेदी ने ख़िलअत
महेदवियत की पाई ख़िलाफ़त शाहे नेमत हैं अज़मत ही अज़मत
उनका रौज़ा है गंजे शहादत
उनका रौज़ा ही मीनारे अज़मत
उनका रौज़ा फ़रिश्तौं की चाहत
आशिक़ौ के दिलौं की है राहत शाहे नेमत का रौज़ा है जन्नत
रोशनी दीन की वह लुटाते
दीने महेदी के नग़मे सुनाते
वह चले रास्ते जगमगाते
साथ उनके चली महेदवियत शाहे नेमत की नूरानी हिजरत
तीसरे है वह दीं के ख़लीफ़ा
उनको हासिल तवक्कुल का सम्रा
फ़ानी फ़िल्लाह हुवे बाक़ी बिल्लाह
ज़ाते हक़ में फ़ना ज़ाते नेमत शाहे नेमत जहाने फ़ज़ीलत
मैं रफ़ीक़ उनके दर का गदा हूँ
फूल मिदहत के बरसा रहा हूँ
उनकी निसबत पे इत्रा रहा हूँ
हश्र में काम आयेगी निसबत शाहे नेमत करेंगे शफ़ाअत

मनक़बत दर शाने हज़रत शाहे नेमत मिक़राज़े बिदअत रज़ी0

- हकीम ख़ाजा ज़मीर

शाहे नेमत आप को अनमोल नेमत मिल गई
जिस पे नाज़ाँ है फ़ज़ीलत वह फ़ज़ीलत मिल गई
दर हक़ीक़ आपको वह शान व अज़मत मिल गई
हक़ तो यह है आप को रोशन हक़ीक़त मिल गई
आबरुए क़ौम व मिल्लत और मताए बन्दगी
है आता अल्लाह की यह यह इल्म और यह आगही

आप सुनते हैं हर एक टूटे दिलौं की इलतिजा
आप के दर पर नज़र आने लगी शाने ख़ुदा
रहमते हक़ आप के दर पर बरस्ती है सदा
शाहे नेमत आप ही वह वह साहबे लुत्फ़ो अता
आप चाहें तो हर एक बिग़ड़ी हुवी बन जायगी
उम्र भर के वास्ते बर एक नज़र काम आयेगी

मिल गया क़िसमत से जिसको भी सहारा आप का
मुतमइन वह हो गया पाकर इशारा आप का
बस गया है जिसकी आंखौं में नज़ारा आप का
मुशिकलौं में नाम ले ले के पुकारा आप का
ए ज़मीर अब क्या सताऐंगे मुझे दर्द व अलम
शाहे नेमत की है मुझ पर घड़ी जश्मे करम

गुज़ारिश

तमाम ज़ाइरीन हज़रत बन्दगी मियाँ शाह नेमत रज़ी० से अदबन् गुज़ारिश है कि दायरा और मस्जिद के इहाते में साफ़ सफ़ाइ का ख़ास ख़याल रखें और बावली में खाने की चीज़ें न फेंकें।

ग़ुलमाने हज़रत शाहे नेमत रज़ी० जनाब शेख़ चाँद साजिद साहब के बेहद शुक्र गुज़ार हैं कि उन्हों ने बड़ी मेहनत से यह रिसाला मुरत्तब किया है

मुख़तसर सीरत

हज़रत बन्दगी मियाँ शाह नेमत रज़ी०

ख़लीफ़ए सुव्वम हज़रत इमामुना मीराँ सय्यद मुहम्मद महेदी मौऊद अले०

फ़ारुक़े विलायत

लेखक

श्री शेख़ चाँद साजिद

एम-ए, एम-फ़िल (उस्मानिया)

नाशिर

ग़ुलामाने हज़रत शाहे नेमत रज़ी०

हज़रत महेदी अले० की हिजरत

हज़रत इमामुना मीराँ सय्यद मुहम्मद महेदी मौऊद अलैहिस्सलाम ने 887 हिज्री/1482 ईसवी में जोनपूर से हिजरत (प्रवास) की और दानापूर, कालपी, चंदेरी से गुज़रत हुवे 891 हिज़्री/1486 में चापानीर (गुजरात) पहुंचे। उस समय यहॉ सुलतान महमूद बेग़ड़ा की हुकूमत थी। चापनीर में ही मीराँ सय्यद अज्मल ने जन्म लिया और उसी मक़ाम पर इमामुना अले० की हरमे मुहतरम (पत्नी) बीबी अलाहदाती रज़ी० ने 3 ज़िलहज्जा 891/नवमबर 1486 को वफ़ात पाई। यहाँ अठारा माह ठहरने के बाद इमामुना अले० मांडो, दौलताबाद, अहमद नगर, बीदर, गुलबर्गा, बीजापू, चीतापूर द्वारा बन्दरगाह डाबोल से हज्जे बैतुल्लाह के लिये 901/1496 में मक्का मुकर्रमा रवाना होगये। हज्ज से फ़ारिग़ होने के बाद इमामुना अले० ने 901 हिज्री में रुक्न और मक़ाम के दरमियान् अल्लाह तआला के हुक्म से महेदियत का दाअवा किया और फ़र्माया कि ''जिस ने मेरी पैरवी की वह मोमिन है''। आप के साथियौं ने और कई अरबौं ने आप के महेदी मौऊद होने की तस्दीक़ (पुष्टि) की और इताअत क़ुबूल की। मक्का मुकर्रमा से आप ने मदीना मुनव्वरा जाने का इरादा किया तो रसूलुल्लाह सल्ला० की रुहे मुबारक से बशारत हुवी कि हम तुम्हारे पास हर समय मौजूद हैं मदीना आने की ज़रुरत नहीं है, अब दाअवा-ए-मुअक्कद का वक़्त क़रीब है, अब तुम सीधे गुजरात जाओ, वहाँ उस दाअवे का इज़्हार होगा।

मक्का मुकर्रमा में कुछ दिन ठहरने के बाद आप अले० गुजरात के लिये रवाना होगये और देवबन्दर (काठियावाड़) पहुंचे। वहाँ बहुत से लोगौं ने आप का बयाने क़ुरआन सुनकर आप की तस्दीक़ की। वहाँ से खम्बायत तश्रीफ़ लाये जहाँ फ़िरक़ा बवाहीर के अकसर लोगौं ने आप के दस्ते मुबारक पर बैअत की। वहाँ से आप 903/1497 में अहमदाबाद तश्रीफ़ लाये जहाँ ताज खाँ बिन सालार की मस्जिद में अठारह महीने क़ियाम फ़र्माया। अब यह मस्जिद हैबत खाँ के नाम

से मश्हूर है। यहाँ आप लोगौं को अल्लाह की तरफ़ बुलाते रहे। आप के बयाने क़ुरआन की ऐसी शोहरत हुवी कि हज़ारों लोग बयान सन्ने के लिये आते थे। अहमदाबाद में हज़ारों लोगौं ने आप से बैअत की, उनमें चंद ख़ास आलिमौं और अधिकारियौं के नाम यह हैं - मलिक बुरहानुद्दीन रज़ी०, मलिक गौहर रज़ी०, मौलना मियाँ यूसुफ़ रज़ी०, मौलाना अहमद शह क़दन रज़ी०, शाह अब्दुल मजीद नूरी रज़ी० शाह अमीन मुहम्मद रज़ी०, शाह अबू मुहम्मद रज़ी०। शाह दिलावर रज़ी० को जज़बए हक़ के कारण दानापूर की मस्जिद दुर्राज में छोज़ दिया गया था। इमामुना महेदी अले० जब अहमदाबाद पहुंचे तो आपकी ख़ुशबू (सुगंध) उन्हे महसूस हुवी और शाह दिलावर रज़ी० को होश आगया। वह तुरंत अहमदाबाद की तरफ़ चल पड़े और 450 मील/725 किलो मीटर का फ़ासला सिर्फ़ गयारह दिन में तै करके इमामुना महेदी अले० की ख़िदमत में हाज़िर हुवे। अहमदाबाद में दूसरी बार हज़रत सय्यद मुहम्मद महेदी मौऊद अले० ने महेदियत का दावा फ़र्माया।

शाह नेमत रज़ी०

अहमदाबाद में आप अले० के बयाने क़ुरआन और दाअवते हक़ से अवाम और ख़वास सभी मुतासीर होने लगे तो दुन्यादार और दरबारी अलमा को अपना मुस्तक़बिल (भविष्य) ख़तरे में नज़र आया इसलिये आप की शदीद मुख़ालफ़त (विरोध) शुरू की, यहाँ तक कि क़त्ल का फ़त्वा लिखा और इख़राज़ का हुक्म जारी करवाया। हुक्म लाने वाले अधिकारी से इमामुना अले० ने फ़र्माया कि बन्दा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० का ताबे है और शरीअते मुहम्मदी का बयान करता है। इसके बाद आप अहमदाबाद से पटन (नहरवाला) जाते हुवे रास्ते में छ मील के फ़ासले पर सांतेज नामी गांव में क़ियाम फ़र्माया। यही वह मक़ाम है जहाँ माअबूदे हक़ीक़ी ने शाह नेमत रज़ी० को नेमते विलायत से सर्फ़राज़ फ़र्माया।

हज़रत बन्दगी मियाँ शाह नेमत रज़ी० के वालिद मलिक बड़े गुजरात के सुलतान महमूद बेगढ़ा (1) के मुकर्रब (समीपस्थ) उमरा (सामंत) में से थे जिनका सिलसिल-ए-नमस हज़रत अबूबक सिद्दीक़ रज़ी० से जा मिलता है। इस तरह शाह नेमत रज़ी० का सम्बंध सिद्दीक़ी वंश से था। आप का जन्म 874/1470 में हुवा। वालिद की क़फ़ात पर यह मन्सबे अमारत (पद) शाह नेमत रज़ी० को दिया गया जब कि उनकी उम्र लग-भग 29 साल थी। सिपाह गिरी और पहलवानी में माहिर थे। जवानी और तबीअत की सख़ती की वजह से वह मन्सब संभाल न सके। किसी इख़तिलाफ़ की वजह से गुजरात के बाज़ आकाबिर (ऊंचे पद वालौं) को मौत की घाट उतार दिया और हातियौं के शाही अस्तबल के निगरान् अब्दुल्लाह हबशी के लड़के को भी क़त्ल करडाला। जब सुलतान महमूद ने गिरफ़तारी के लिये सिपाहियौं को भेजा तो अपने साथियौं के साथ फ़रार हो गये। जब वह सांतेज से गुज़र रहे थे तो अज़ान की मुतासिर कुन (प्रभावशाली) आवाज़ सुनकर रुक गये और अपने साथियौं को भी नमाज़ के लिये रुकने का मश्वरा दिया लेकिन चूंकि सेना पीछा कर रही थी इस लिये डरकर वह सब फ़रार होगये, लेकिन शाह नेमत रज़ी० ने नमाज़ अदा करने का फ़ैसला किया और वज़ू कर के नमाज़ में मश्ग़ूल होगये। इतने में सिपाही भी पहुंचगये लेकिन कुदरते इलाही से आप में ऐसा नुरानी तग़य्युर (परिवर्तन) आ गया था कि आप को पहचान न सके इस लिये आगे बढ़गये।

हज़रत महेदी अले० से मुलाक़ात

नमाज़ पढ़ने के बाद शाह नेमत रज़ी० ने एक रास्ता चलने वाले से पूछा कि इस बियाबान में अज़ान किस ने दी तो उसने बताया कि अहमदाबाद से अल्लाह वालौं की एक जमाअत यहाँ आई हुवी है और उनही के पड़ाव स्थान (दायरे) से आज़ान की आवाज़ आई थी। शाह नेमत रज़ी० जब वहाँ पहुंचे तब इमामुना महेदी अले० क़ुरआन का बयान फ़र्मा रहे थे। बयाने क़ुरआन सुनकर

शाह नेमत रज़ी० इतना मुतासिर हुवे कि अपने पिछले आमाल (कर्म) को याद करके रोने लगे। मग़रिब की नमाज़ के बाद इमामुना अले० ने नाम पूछे बिना फ़र्माया कि आओ मियाँ नेमत, तुम नेमत से माअमूर (परिपूर्ण) हो। उसी वक़्त शाह नेमत रज़ी० ने इमामुना महेदी अले० के हाथ पर बैअत की और अपनी ख़ताओं का ज़िकर किया। इमामुना अले० ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला ग़फ़ूरु-र-रहीम (क्षमावान और दयावान) है, अगर सच्चे दिल से तौबा की तो अल्लाह के हुक़ूक़ अल्लाह ख़ुद माफ़ करेगा लेकिन बन्दौं के हुक़ूक़ को बन्दौं से ही माफ़ कराना होगा। चुनांचे इमामुना अले० से इजाज़त लेकर शाह नेमत रज़ी० लोगौं से अपने गुनाह माफ़ करवाने के लिये रवाना हुवे।

सबसे पहले अब्दुल्लाह हबशी के घर पर आवाज़ दी जिसके बेटे की आपने हत्या की थी। पहले तो वह डर गया लेकिन शाह नेमत रज़ी० की आजिज़ी (नम्रता) देख कर बाहर आया। आप ने तलवार उसके हाथ में दे कर अपनी गर्दन झुका दी और कहा कि तुम्हारे बेटे की हत्या का क़सास (ख़ून का बदला) चुकाने आया हूँ। शाह नेमत रज़ी० की तबीअत (स्वभाव) में यह इन्क़ेलाब (परिवर्तन) देखकर उसे सख़्त हैरत हुई। उसने कारण पूछा तो आप ने तमाम वाक़िआ कह दिया। उस ने ख़ून माफ़ कर दिया और ख़ुद भी इमामुना अले० की ख़िदमत में चलने की ख़ाहिश ज़ाहिर की। इस तरह शाह नेमत रज़ी० ने तमाम मज़लूम लोगौं के पास जाकर अपने गुनाह माफ़ कराये, फिर अपने घर जाकर अपनी पत्नियों का महर अदा किया और कहा कि नन्दे ने हज़रत सय्यद मुहम्मद महेदी मौऊद अले० की सुहबत इख़तियार करली है, अब तुम्हारा इख़तियार (अधिकार) तुम्हारे हाथ में है। इस तरह अपने ज़िम्मे वाजिबुल-अदा हुक़ूकुल-इबाद माफ़ करवाकर आप इमामुना अले० की ख़िदमत में पहुंचे जो उस समय पटन (2) में थे। पटन में इमामुना महेदी अले० अठारह महीने ठहरे रहे। बन्दगी मियाँ शाह नेमत रज़ी० की तबीअत में इनक़िलाब का यह वाक़िआ हज़रत महेदी अले० की सुहबत के असर की बेहतरीन मिसाल है और क़ुरआने

मज़ी की इस आयत का सुबूत भी है कि ''अल्लाह जिसे हिदायत देता है उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता।''

पटन ही वह मक़ाम है जहाँ हज़रत बन्दगी मियाँ सय्यद ख़ुंदमीर रज़ी०, ने बैअत और तस्दीक़ का शर्फ़ (प्रतिष्ठा) हासिल किया। उनके अलावा मश्हूर उलमाए दीन मौलाना मियाँ लाड़ शाह, मौलाा यूसुफ़ सुहेत, मौलाना मियाँ मुहम्मद ताज और मौलाना मियाँ अब्दूर-रशीद पटनी वग़ैरह ने बैअत और तल्क़ीन का शर्फ़ हासिल किया। इसी मक़ाम पर इमामुना महेदी अले० के पुत्र मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० ने इमाम अले० से कसबे मआश की इजाज़त हासिल की और चापानीर चले गये। पटन में इमामुना अले० ने मियाँ लाड़ शाह पटनी की पुत्री बीबी मलकान रज़ी० से निकाह किया। अहमदाबाद से पटन का फ़ासला 180 मील/290 किलो मीटर है। पटन मलिक नसीरुद्दीन मुबारिज़ुल मुल्क की जागीर थी जो हज़रत बन्दगी मियाँ सय्यद खुंदमीर रज़ी० की वालिदा मुहतरमा के हक़ीक़ी चचा थे। पटन में इमाम अले० ने क़ाज़ी क़ादन की ख़ानक़ाह में क़ियाम फ़र्माया।

पटन के दुन्यादार उलमा ने इमाम महेदी अले० की बढ़ती हुवी शुहरत और मक़बूलियत देखकर गुजरात सरकार को अरज़ी दी कि यहाँ मीराँ सय्यद मुहम्मद महेदी अले० का क़ियाम अवाम और हुकूमत के लिये ख़त्रा है, इस पर हुकूमत ने इमाम अले० को पटन से निकल जाने का हुक्म दिया। यह सुनकर आप अले० ने फ़र्माया कि मुझे पहले ही मेरी सरकार से कूच करने का हुक्म मिल चुका है, मेरा सफ़र और मेरा क़ियाम अल्लाह के हुक्म के ताबे है।

बढ़ली मे दाअव-ए-मुअक्कद का इज़हार

पटन से निकल कर इमामुना महेदी अले० ने पाँच मील के फ़ासले पर बढ़ली में क़ियाम फ़र्मायी और वहाँ 905 हिज्री/1499 में अल्लाह तआला के हुक्म से तीसरी बार दाअव-ए-मुअक्कद फ़र्माया कि ''बन्दा ख़ुदा के हुक्म से

दावा करता है कि मैं महेदी मौऊद हूँ, जिस ने मेरी इताअत की उस ने ख़ुदा की इताअत की और जिस ने ना फ़र्मानी की उसने ख़ुदा की नाफ़र्मानी की''। महेदियत के दाअव-ए-मुअक्कद के बाद आप अले० ने सलातीन और उलमा को पत्र लिखे कि इस दाअवे की तहक़ीक़ करें और यह भी लिखा कि तुम मेरे अक़वाल, अफ़आल और आहवाल को पवित्र क़ुरआन से मिला कर देखो, अगर यह साबित हो जाये कि बन्दा महेदी मौऊद है तो तस्दीक़ करो और हक़ की मदद् करो और अगर साबित हो जाय कि बन्दा झूटा है तो बन्दे को क़त्ल करदो। पटन के उलमा ने आप अले० से चौदह सवालात किये जिनका आप अले० ने तशफ़्फ़ी बख़्श जवाब दिया। बढ़ली में चार महीने क़ियाम के बाद इमामुना महेदी अले० जालोर, नागोर, जैसलमीर, ठट्ठा, काहा और क़ंधार से गुज़रते हुवे फ़राह मुबारक पहुंचे।

गुजरात यात्रा और वापसी

तालिबाने ख़ुदा का यह क़ाफ़िला जब 908 हिज्री/1503 में काहा (नसरपूर (3) में था हज़रत शाह नेमत रज़ी० और बाज़ दूसरे सहाबा रज़ी० को उनके घर वालौं से ख़ुतूत (पत्र) वसूल हुवे कि हम भी तालिबाने ख़ुदा हैं आकर हमें लेजाओ क्योंकि हम भी इमाम महेदी अले० की मुहबत में रहना चाहते हैं। इमामुना अले० ने बन्दगी मियॉ सय्यद ख़ुंदमीर रज़ी०, बन्दगी मियाँ शाह नेमत रज़ी०, बन्दगी मियाँ अब्दुल मजीद रज़ी०, बन्दगी मियाँ शेख़ मुहम्मद कबीर रज़ी०, और बन्दगी मियाँ यूसुफ़ रज़ी० को गुजरात रवाना फ़र्माया। मियाँ सय्यद सलामुल्लाह रज़ी० ने हज़रत शाह ख़ुंदमीर रज़ी० के ज़रीए हज़रत मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० को एक ख़त रवाना किया जो उस वक़्त गुजरात के सुलतान महमूद बेगढ़ा की जानिब से अता करदा मन्सबे अमारत पर फ़ाइज़ थे। ख़त मिलते ही हज़रत मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० ने मन्सब (पद) छोड़ दिया और जाने के लिये निकल पड़े। इधर शाह नेमत रज़ी० और

दूसरे महाबा भी अपने परिवार को साथ लेकर अहमदाबाद से निकले। जब उनकी रवानगी की सूचना मिली तो सुलतान महमूद बेगढ़ा की बहनें राजे सूँ और राजे मुरादी ने हज़रत इमामुना महेदी अले० की ख़िदमत में पहुंचाने के लिये बहुत कुछ फ़ुतूह, नक़द रक़्म, लिबास, हत्यार, घोड़े, ऊंट वग़ैरा शाह ख़ुदंमीर रज़ी० और शाह नेमत रज़ी० के हवाले किया।

यह असहाब रज़ी० अहमदाबाद से निकल कर राधनपूर पहुंचे, बाज़ किताबों में पीराँ पटन लिखा हुवा है। उस वक़्त शाह नेमत रज़ी० के साथ चालीस या साठ लोग तारिके दुन्या तालिबे ख़ुदा थे। उस मक़ाम पर जहाँ शाह नेमत रज़ी० ठहरे हुवे थे मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० तश्रीफ़ लाये और उस वक़्त आप का सफ़र ख़र्च ख़तम होचुका था। इस लिये आपने शाह नेमत रज़ी० से कुछ माल उधार मांगा, लेकिन शाह नेमत रज़ी० ने फ़र्माया कि यह माल अमानत है इसमें ख़ियानत करने का बन्दा मजाज़ (अधिकृत) नहीं है। इस जवाब से मीरॉ सय्यद महमूद रज़ी० बहुत दुःखी हुए क्योंकि ख़लीफ़तुल्लाह की ख़िदमत में पहुंचने के लिये उसके सिवाय कोई उपाय सुझाइ नहीं दे रहा था। उस दौरान शाह ख़ुंदमीर रज़ी० भी आ गये और मालूम होने पर जो कुछ फ़ुतूः आपके पास थी वह सब मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० की ख़िदमत में मांगे बिना ही पेश करदी। इस तरह यह क़ाफ़ला जब फ़राह मुबारक (अफ़ग़ानिस्तान) पहुंचा तो इमामुना अले० बहुत ख़ुश हुवे और शहर फ़राह में दाख़िल हुवे, उस समय तक आप अले० शहर के बाहर मुक़ीम थे। एक रिवायत यह भी है कि तीनों अस्हाब रज़ी० एक ही पालकी में बैठकर गये थे। (4) फ़राह मुबारक में इमाम महेदी अले० का क़ियाम दो साल पांच महीने रहा। (5)

फ़राह में एक मौक़े पर मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० ने सफ़र के वाक़िआत सुनाते हुवे शाह खुदंमीर रज़ी० की इआनत (सहयोग) और शाह नेमत रज़ी० के इनकार का ज़िकर किया तो इमामुना अले० ने शाह नेमत

रज़ी० को इस भूल पर नाराज़गी का इज़हार किया। शाह नेमत रज़ी० रंजीदा होकर जंगल की मस्जिद में चले गये। इमामुना अले० ने ख़ुदा के हुक्म से उनकी भूल माफ़ की और उनकी ढारस बंधा कर उन्हें हाथ पकड़ कर दायरे में वापस लाये।(6) मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० और बन्दगी मियाँ सय्यद ख़ुंदमीर रज़ी० और दूसरे सहाबा रज़ी० के फ़राह मुबारक आने के बाद इमामुना अले० छे महीने पंदरह दिन जीवित रहे। इस मुद्दत में पवित्र क़ुरआन के हक़ाइक़ और मआरिफ़ का बयान होने लगा।

हज़रत महेदी अले० की रेहलत

इमामुना महेदी अले० ने अपने विसाल से पहले आख़री नमाज़े जुमा के बाद जामे मस्जिद फ़राह में वितर की नमाज़ अदा फ़र्माइ। उस वक़्त जो उलमा वहाँ मौजूद थे वह समझ गये कि यही ज़ात महेदी मौऊद है। उन उलमा ने आप अले० से कुछ सवालात किये और मुतमइन होकर आप अले० की तस्दीक़ कर ली। जिस दिन इमामुना महेदी अले० का मिज़ाज नासाज़ होगया उस दिन आपने सब अस्हाब व महाजिरीन को जमा करके आयत *''अल योम अकमलतु तकुम दीनकुम''* का बयान फ़र्माया। हज़रत इमामुना सय्यद मुहम्मद महेदी मौऊद अले० ने 19 ज़ीक़दा 910 हिज्री/23 एप्रेल 1505 को रेहलत फ़र्माइ। उस वक़्त शाह नेमत रज़ी० आपके सरहाने मौजूद थे। आप ने पूछा कि कौन है तो उन्हों ने अर्ज़ किया कि बन्दा नेमत है। इमामुना अले० ने तीन बार फ़र्माया कि अल्लाह का फ़र्मान तुम्हारे हक़ में यह होता है कि तुम को तुम्हारे अहल के साथ बख़श दिया और आप अले० ने अपने सर पर जो टोपी थी उसको अपने दस्ते मुबारक से बन्दगी मियाँ शाह नेमत रज़ी० के सर पर रख दी और फ़र्माया कि यह ख़िलअत अल्लाह के हुक्म से तुम को अता हुई है। (7) इमामुना अले० जब अपने बारे में कफ़न दफ़न के अलफ़ाज़ इस्तेमाल करने लगे तो शाह नेमत रज़ी० से ज़ब्त न हो सका

और रोने लगे। यह देख कर इमामुना अले० ने फ़र्माया कि मियाँ नेमत यह रोने का वक़्त नहीं है, अभी तो बन्दा तुम में है और जब तक बन्दे की इत्तेबा करोगे बन्दा तुम में रहेगा, और जब बन्दे की रविश को छोड़ दोगे और ख़ुदा की तलब दिलों से निकल जायेगी तो समझो कि बन्दा तुम में नहीं रहा। इस फ़र्माने आली में लफ़्ज़ ''तुम'' ख़ास नहीं बल्कि आम है, और हमारे लिये दाअवते फ़िक्र है। इमामुना अले० का विसाल हुवा तो शाह नेमत रज़ी० ने आप के जसदे अत्हर (पवित्र शरीर) को ग़ुस्ल दिया और मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० ने जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई। फ़राह और रच के दरमियान एक बाग़ में आप अले० की तदफ़ीन अमल में आई। तदफ़ीन के बाद सहाबा और महजिरीन ने देखा कि मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० की सूरत हज़रत इमामुना महेदी मौऊद अले० के जैसी होगइ है और सीरत व औसाफ़ भी वही हैं तो उनको सानीय महेदी के लक़ब से मुक़ातिब किया।

फ़राह मुबारक से वापसी

हज़रत इमामुना सय्यद मुहम्मद महेदी मौऊद अले० की रेहलत के बाद आप के पुत्र मीराँ सय्यद महमूद सानिय महेदी रज़ी० दूसरे अस्हाब और महाजिरीन के साथ एक साल तक फ़राह मुबारक में ठहरने के बाद गुजरात चले आये और भेलूट में क़ियाम फ़र्माया। आप को इमामुना अले० की रूहे मुबारक से हुक्म मिला था कि सब को लेकर गुजरात चले जाओ क्यों कि यहाँ एक ज़लिम आने वाला है। इन लोगौं के गुजरात जाने के कुछ दिन बाद इस्माईल शाह सफ़वी जो अहले सुन्नत वल-जमाअत का शत्रु था उस ने वहॉ तबाही मचाइ और इमामुना अले० के रोज़े मुबारक को ढाना याहा लेकिन ऐसी आंधी आई कि वह डर कर भाग गया।

मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० ने गुजरात आने के कुछ दिन बाद सहाबा रज़ी० को अलग-अलग दायरा बांध कर रहने की हिदायत की ताकि धर्म का

प्रचार हो सके। शाह नेमत रज़ी० ने अकारसी में ओर शाह निज़ाम रज़ी० राधनपूर में दायरा बांध कर रहे।

भेलूट में मीराँ सय्यद महमूद सानिय महेदी रज़ी० के आने के बाद दीन की तब्लीग़-व-इशाअत का काम ज़ोर पकड़ने लगा। अवाम और ख़वास (साधारण और प्रमुख लोग) सभी हलक़य इरादत में दाख़िल (श्रद्धवान) होने लगे तो दुन्यादार और ईमान फ़रोश उलमा और मुल्लाओं की हसद की आग भड़क उठी और उन्हें अपना मुस्तक़विल (भविष्य) ख़त्रे में नज़र आने लगा, इस लिये उन्हों ने सुलतान मुज़फ़्फ़र शाह सानी (8) को बहका कर और भटका कर मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० की गिरफ़तारी का आदेश निकलवाया और रबीउस् सानी 919 हिज्री/1514 के अंतिम दिनौं में आप को गिरफ़तार करके अहमदाबाद के क़ैद ख़ाने में रखा गया। जब आप को पाँव में बेड़ी डालकर ले जा रहे थे तब शाह नेमत रज़ी० और शाह निज़ाम रज़ी० भी पहुंच गये और मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० के बदले ख़ुद को गिरफ़तारी के लिये पेश किया और आप के साथ-साथ चलने लगे लेकिन मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० ने उन्हें आने से मना किया और कहा कि यह हिकमत नहीं कि हम सब दुश्मन के हाथ गिरफ़तार हो जायें। जब सुलतान मुज़फ़्फ़र शाह की फूफियौं यानि सुलतान महम्द बेगढ़ा की बहनौं को जो हज़रत महेदी मौऊद अले० की मोतक़िद (श्रद्धावान) और मुसद्दिक़ थीं इस घटना की सूचना मिली तो उन्होंने सख़्त एहतिजाज किया और मुज़फ़्फ़र शाह को सख़्त लाअनत मलामत करके एकतालीस दिन बाद हज़रत महेदी अले० के प्रिय पुत्र को रेहाई दिलाई। सुलतान के आदमियौं ने पालकी में बिठाकर आप को दायरे में पहुंचा दिया, लेकिन भारी बेड़ियों के कारण आपके पांव में ज़ख़्म पड़ गये थे जिसके कारण ढाई महीने बाद 4 रमज़ान 919 हिज्री/3 नवम्बर 1514 को मीराँ सय्यद महमूद सानीय महेदी रज़ी० ने विसाल फ़र्माया। आप के जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने का शर्फ़ शाह नेमत रज़ी० ही को हासिल हुवा।

मियाँ सय्यद अली रज़ी० की शहादत

हज़रत मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० की रेहलत के कुछ समय बाद सुलतान मुज़फ़्फ़र शाह सानी ही के दौर में दुन्यादार और दरबारी उलमा के दिलौं में हसद की आग फिर भड़क उठी तो शाह नेमत रज़ी० को गिरफ़तार करके ले जाया जा रहा था। रास्ते में हज़रत महेदी अले० के फ़र्ज़न्द मियाँ सय्यद अली रज़ी० ने पूछा कि इन्हें कहाँ ले जारहे हो। सिपाहियों ने कहा कि बादशाह के दरबार में ले जा रहे हैं। मियाँ सय्यद अली रज़ी० ने पूछा कि उनके बदले में अगर तुम्हें महेदी का फ़र्ज़न्द मिल जाय तो क्या उनको छोड़ दोगे। सिपाही राज़ी होगये। मियाँ सय्यद अली रज़ी० ने फ़र्माया कि मैं महेदी अले० का पुत्र हूँ मुझे ले चलो। सिपाहियौं ने शाह नेमत रज़ी० को छोड़कर मियाँ सय्यद अली० रज़ी० को गिरफ़तार कर लिया और दरबार में पेश किया जहाँ क़ैद का हुक्म सुनाया गया। एक मुद्दत तक आप क़ैद में रहे। मुज़फ़्फ़र शाह सानी की मौत (931 हिज्री/1526) के बाद सुलतान बहादुर शाह (9) तख़्त पर बैठा तो एक महेदवी अमीर मलिक पीर मुहम्मद की दरख़ास्त पर आप की रिहाई के अहकाम जारी हुए, लेकिन उसके बावजूद एक वज़ीर सदर खाँ ने आप को शहीद कर डाला। बाज़ रिवायतौं के मुताबिक़ आप को भदर की दीकर में चुन दिया गाया। यह वाक़आ 20 रबीउस-सानी 933/1527 का है जब कि आप की उम्र 32 साल थी।

दुन्यादार और ईमान फ़रोश उलमा के इन वहशियाना मज़ालिम और साज़िशों से ज़ाहिर होता है कि महेदवी तालिबाने ख़ुदा से उन्हें कितना बैर और कपट था, और किस तरह उन्हों ने मुस्लिम सलातीन को बहकाया और अपने दुन्यावी मफ़ाद (लाभ) और मन्सब (पद) के लिये अनगिनत बन्दगाने ख़ुदा का ना हक़ ख़ून बहाया। यह भी एक हक़ीक़त है कि भारत पर मुस्लिम सलातीन ने हज़ार साल से ज़ियादा समय तक हुकूमत की लेकिन किसी भी बादशाह ने इस्लाम के प्रचार की कोशिष नहीं की। अगर यहाँ इस्लाम फैला है तो सिर्फ़ औलिया और सूफ़िया के हुसने अख़लाक़ (सदाचार) से फैला है।

जालौर में आमद

शव्वाल 930 हिज्री/अगस्त 1524 में हज़रत कन्दगी मियाँ सय्यद ख़ुंदमीर सिद्दीक़े विलायत रज़ी० की शहादत के बाद महेदवी गुजरात से हिजरत करके जलोर चले आये जहाँ हज़रत मियाँ अलाहदाद रज़ी० ने शाह ख़ुंदमीर रज़ी० का चहलुम (चालीसवाँ दिवस) किया, लेकिन शाह नेमत रज़ी० उसमें शरीक नहीं थे। तहजुद की नमाज़ के बाद अल्लाह तआला ने आप पर हालात ज़हिर किये तो आप ख़ुद चलते हुवे मियाँ अलाहदाद रज़ी० के पास आये और इस पवित्र मुद्ध ''बदरे विलायत'' में शिर्कत से महरूमी पर अफ़सोस का इज़हार किया और कहा कि बन्दगी मियाँ शाह ख़ुंदमीर रज़ी० का यह शर्फ़ और अज़मत पहले ही मालूम होता तो दस क़दम आगे रह कर जंग करता। आप ने चहलुम का तबर्रुक तलब किया तो मालूम हुवा कि ख़तम हो चुका है। फिर बचा-कुचा तबर्रुक यहाँ तक कि पकवान के बरतनौं का धोया हुवा पानी मांगा तो वह भी नहीं था। आप के इसरार (अनुरोध) पर मियाँ अलाहदाद रज़ी० ने दुबारा तबर्रुक तैयार करवा कर पेश किया। उसके बाद शाह नेमत रज़ी० ने अपना दायरा और मकानात वग़ैरह सब कुछ अल्लाह दिया कहकर मियाँ अलाहदाद रज़ी० को सोंप दिया और वहाँ से निकल कर भावीपूर चले गये। मुख़तलिफ़ रिवायात से पता चलता है कि शाह नेमत रज़ी० के दायरे सिंध, नागोर, चापानीर, धोलक़ा, बड़ली, बैरम और दौलताबाद में भी रहे हैं।

दकन की तरफ़ हिजरत

हज़रत मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० की रेहलत के बाद आप के ख़ादिमे ख़ास बन्दगी मियाँ ख़ुंद शेख़ रज़ी० बाद आप के ख़ादिमे ख़ास बन्दगी मियाँ ख़ुंद शेख रज़ी० गुजरात से दकन (अहमदनगर) चले आये जहाँ का बादशाह बुरहान निज़ाम शाह आप का मोतक़िद हो गया. यह वही बुरहान

निज़ाम शाह है जो हज़रत महेदी अले० के पसख़ुर्दा की बरकत से पैदा हुवा था। जब इमामुना महेदा अले० 895/1490 में अहमदनगर आये थे वहाँ का बादशाह अहमद निज़ाम शाह औलाद की तमन्ना लिये आप की मज्लिस में हाज़िर हुवा तो आप ने पान का पसख़ुर्दा (झूटन) अता (प्रदान) किया जिस में से आधा - आधा बादशाह और उसकी पत्नी ने खालिया। उसकी बरकत से उसी दिन बादशाह की पत्नी हामिला (गर्भवती) होगई और बुरहान निज़ाम शाह पैदा हुवा (10) यह महदी अले० का मुसद्दिक़ था और उसने अकसर अस्हाब और मुहाजिरीन रज़ी० को बुलाकर अपनी रियासत में रखा था यहाँ तक कि उसने अपनी एक दुख़तर (कन्या) का विवाह हज़रत महेदी अले० के पोत्रे और मियाँ सय्यद हमीद रज़ी० के पुत्र हजरत मीराँजी रज़ी० से किया था। उस ज़माने में अहमदनगर में मज़्हबे महेदवियह को बहुत उरूज (उत्थान) हासिला हुवा। अकसर उमरा (प्रमुख अधिकारी) महेदवी थे। (11)

हज़रत शाह दिलावर रज़ी० का दायरा भिंगार में और हज़रत शाह नेमत रज़ी० का दायरा मावल में था। (12)

शाह नेमत रज़ी० अपने फ़ुक़रा के साथ दकन की तरफ़ हिजरत करते हुवे जब दर्याए गोदावरी के किनारे पहुंचे तो नदी में तुग़यानी थी। आप नदी में उतर कर नदी के बीच में आकर खड़े होगये, पानी कमर तक कम होगया, तमाम फ़ुक़रा ने नदी पार करली फिर आप भी नदी के किनारे पर आगये।

मुन्तख़बुल - लुबाब के लेखक का कहना है कि 928 हिज्री/1522 में ईरान का शेआ आलिम शाह ताहिर अहमदनगर आया और अपनी चालाकी से शाही दर्बार में रसाई हासिल करली। उसकी कोशिष और साज़िश से 944/1538 में बुरहान निज़ाम शाह ने शेआ मज़्हब अपना लिया। उसके बाद अहमद नगर से महेदवियौं को ख़रिज किया जाने लगा। उमरा ने बादशाह की मुख़ालफ़त शुरू की क्योंकि मसाजिद में शेआ ख़ुत्बा जारी कर दिया गया जिसमें ख़ुलफ़ाए राशिदीन रज़ी० की शान में गुस्ताख़ी की जाती थी। (13)

बशारतें

बन्दगी मियाँ शाह नेमत रज़ी० को बहुत सारी बशारतें दी गई थी उनमें से कुछ बशारतें पेश की जा रही हैं।

१) हज़रत इमामुना महेदी अले० ने शाह नेमत रज़ी० को उन बारह ख़ुलफ़ा में शुमार किया जिन्हें क़तई जन्नती होने की बशारत (शुभ सूचना) दी गई थी।

२) हज़रत इमामुना महेदी अले० ने अल्लाह तआला के हुक्म से शाह नेमत रज़ी० को उनके परिवार के साथ बख़्श दिये जाने की बशारत सुनाई।

३) हज़रत इमामुना अले० ने फ़र्माया कि मियाँ नेमत रज़ी० हमारी सिफ़तौं (गुणौं) में से तीन सिफ़ात रखते हैं - रस अन्दाज़ हैं, जाँबाज़ हैं और सरफ़राज़ हैं।

४) हज़रत इमामुना अले० ने फ़र्माया कि मियाँ नेमत रज़ी० के नाम का पहला अक्षर नून् है और वह सर से पाँव तक ख़ुदा के नूर से मुनव्वर (प्रकाशित) हैं।

५) हज़रत इमामुना अले० ने फ़र्माया कि मियाँ नेमत रज़ी० हया (लज्जा) में हज़रत उस्मान रज़ी० के समान हैं। और मर्दे शुजाअ (वीर) हैं, विलायत के उमर रज़ी० हैं। इसी लिये आप को **''फ़ारुक़े विलायत''** कहा जाता है।

६) हज़रत इमामुना अले० ने फ़र्माया कि मियाँ नेमत रज़ी० मिक़्राज़े बिदअत हैं, यानि दीन में दाख़िल बिदअतौं को काटने वाली क़ैंची हैं।

७) हज़रत महेदी अले० ने फ़र्माया कि मियाँ नेमत रज़ी० फ़ानी फ़िल्लाह बाक़ी बिल्लाह हैं।

८) हज़रत महेदी अले० ने शाह नेमत रज़ी० के हक़ में यह आयत पढ़ी: *''वला यातल ऊलुल् फ़ज़्लि मिनकुम वस्सअति अंय यूतू ऊलिल् क़ुर्बा वल मसाकीन वल मुहाजिरीन फ़ी सबी लिल्लाह वल् याफ़ू यसफ़हू .... (अन्-नूर-२२)*।

९) शाह नेमत रज़ी० ने मुआमला देखा कि हज़रत महेदी अले० की ज़ात में वासिल हो गये हैं। यह मुआमला हज़रत महेदी अले० को सुनाया तो आप ने फ़र्माया कि तुम को मेरी ज़ात में कामिल फ़ना हासिल है।

दाफ़े बलीयात

हज़रत शाह नेमत रज़ी० को दाफ़े बलीयात यानि बलाओं को रोकने या हटाने वाला कहा जाता है। फ़राह मुबारक में इमामुना अले० के पुत्र मियाँ सय्यद हमीद रज़ी० बीमार हो गये। इमामुना अले० ने बीबी मलकान रज़ी० से फ़र्माया कि मेरे अस्हाब को खिलाओ। बीबी ने अस्हाबे किराम को खाना खिलाया लेकिन उस समय शाह नेमत रज़ी० मौजूद नहीं थे, इस लिये बीबी ने कहा कि उनकी सवीयत का खाना उनके घर भेच देंगे। हज़रत महेदी अले० ने फ़र्माया कि जब वह अपने घर आयें तो उन्हें बुलाकर मियाँ सय्यद हमीद रज़ी० के पास बिठाकर खिलाओ तो जल्द शिफ़ा होगी। चुनांचे वैसा ही किया गया। जब शाह नेमत रज़ी० वापस जाने लगे तो इमामुना अले० ने बीबी रज़ी० से फ़र्माया कि मियाँ नेमत के क़दमौं के नेचे देखो काले गोले लुढ़कते हुए जा रहे हैं जो बलाऐं हैं और इन भाइयौं के क़दमौं की बरकत से दूर होगये, अब मियाँ हमीद सिहत याब होजाऐंगे। इसी लिये शाह नेमत रज़ी० को ''दाफ़े बलीयात'' कहा जाता है।

पसख़ुरदे की तासीर

गिरोहे महेदवियह में झाड़ फूंक के बजाए पसख़ुरदे का तरीक़ा राइज है जो रसूलुल्लाह सल्ला० की इत्तेबाअ है। हज़रत महेदी अले० और आप के ख़ुलफ़ा और ताबईन के पसख़ुरदे की तासीर (प्रभाव) के सब ही क़ाइल थे।

चापानीर में एक अमीर ने ज़ुहर की नमाज़ के बाद शाह नेमत रज़ी० से निवेदन किया कि मेरी गर्दन टेढ़ी हो गई है कुछ पढ़कर फूंक दीजिए।

आपने फ़र्माया कि मैं पढ़ना नहीं जानता। अगर तुम चाहो तो पसख़ुरदा ले लो अल्लाह ने चाहा तो शिफ़ा हो जायेगी। उसने पसख़ुरदा लेकर गर्दन पर मला और शिफ़ा पाया।

जालोर में एक शख़्स अपने छोटे बच्चे को साथ लाया और कहा कि उसको बिच्छु काटा है लेकिन पता नहीं चलता कि कहाँ काटा है और हर क़िसम का इलाज बेसूद (विफल) साबित हुआ है। शाह नेमत रज़ी० ने क़र्माया कि महेदी अले० की दवा करो शिफ़ा हो जायगी। यह सुनकर उसने इजमाअ का पसख़ुर्दा लिया और बच्चे के शरीर को धोया जिस से शिफ़ा हो गई।

बेलापूर गाँव में मियाँ पीर मुहम्मद के घर पर पत्थर गिरते थे और इस आसेब (प्रेत बाधा) से लोग ख़ौफ़ज़दा (भयभीत) थे। शाह नेमत रज़ी० के हुक्म से इज्माअ का पसख़ुरदा लेकर घर के चारौं तरफ़ छिड़क दिया गया और आसेब ज़दा लोगौं को पिलाया गया जिस से बला दूर हो गई।

तवक्कुल

तवक्कुल का माना अल्लाह पर पूरा विश्वास रखना है। हज़रत शाह नेमत रज़ी० का हर अमल इमामुना अले० की मुकम्मल इत्तिबा का मज़्हर था। तवक्कुल के मामले में ख़ुद इमामुना अले० ने आप को कई बशारतें दी हैं। आप सिर्फ़ दायरे में इज़तिरार (व्याकुलता) की सूरत में ही फ़ुतूह क़ुबूल करते थे, अगर ऐसा न हो तो लौटा देते थे कि किसी दूसरे दायरे में पहुंचा दो।

फ़राह में शाह नेमत रज़ी० के पास सिर्फ़ एक तहबंद के सिवा कोई लिबास नहीं था। जब इमामुना अले० आपके क़रीब आए तो आप शरमा कर रूकू की हालत में खड़े हो गये। यह हालत देखकर इमामुना अले० को बहुत अफ़सोस हुवा। इस पर अल्लाह तआला का फ़र्मान् आया कि ऐ सय्यद मुहम्मद मियाँ नेमत को ईमान की बशारत दो। इमामुना अले० ने आप को ईमान की बशारत सुनाई और कंधे पर हाथ मार कर फ़र्माया कि मियाँ नेमत मरदे मरदाना हैं।

हज़रत महेदी अले० ने फ़र्माया कि हम और मियाँ नेमत रज़ी० तवक्कुल के मैदान में धोड़े दौड़ाए, कुछ फ़र्क़ न था मगर दो कान का।

जालोर में मियाँ प्यारा अफ़ग़ान ने कुछ फ़ेरोज़ी सिक्के पोटलियों में बांधकर इस हिदायत के साथ पेश किये कि फ़लाँ को इतने दिये जाऐं। शाह नेमत रज़ी० ने इमामुना अले० की इत्तिबाअ करते हुवे लेने से इनकार कर दिया और फ़र्माया कि अगर ख़ुदा के लिये लाया है तो ला वर्ना उठाकर लेजा। यह सुनकर मियाँ प्यारा ने कहा कि ख़ुदा के लिये लाया हूँ, तब शाह नेमत रज़ी० ने तमाम पोटलियौं को खोल कर सिक्के एक जगह जमा करके तमाम फ़ुक़रा में सवियत फ़रमादी (समान रूप से बांट दिया)।

शाह नेमत रज़ी० ने दायरे में रहने वाले फ़ुक़रा को दायरे के बाहर अपने क़राबत दारौं (संबन्धियौं) और मुवाफ़क़ीन के घरौं को जाने से सख़्ती से मना कर दिया था।

तक़्वा

तक़्वा का माना धार्मिकता, भक्ति और संयम हैं। हज़रत शाह नेमत रज़ी० इमामुना अले० के सिर्फ़ सहाबी ही नहीं बल्कि तीसरे ख़लीफ़ा भी थे और *अती उल्लाहा व अती उर्रसूल* की चलती फिरती तफ़सीर थे।

हज़रत मीराँ सय्यद महमूद सानी महेदी रज़ी० के विसाल के बाद आप के पुत्र शाह याक़ूब रज़ी० तलक़ीन (दीक्षा) के लिये शाह नेमत रज़ी० के पास तश्रीफ़ लाए तो आप ने फ़र्माया कि मेरी क्या मजाल है जो मीराँ सय्यद महमूद रज़ी० के दम पर अपना दम दूँ। इतने में हज़रत मीराँ रज़ी० की रूहे मुबारक से हुक्म मिला कि मियाँ जी को ताज़ा दम दो क्योंकि हम और तुम एक वजूद हैं, तब शाह नेमत रज़ी० ने शाह याक़ूब रज़ी० को बुला कर तलक़ीन फ़र्माई और कहा कि हज़रत मीराँ रज़ी० के हुक्म से मीराँ रज़ी० का दम याद दिलाता हूँ, इस तरह ज़िक्रे ख़फ़ी की तलक़ीन फ़र्माई।

हज़रत महेदी अले० के पोत्रे मियाँ सय्यद मंजू और मियाँ सय्यद मीराँजी तरबियत के लिये शाह नेमत रज़ी० के पास आए तो आप दोनों को पालकी में बिठाकर शाह याक़ूब रज़ी० के दायरे में लाये और उन्हें तलक़ीन करने का हुक्म दिया लेकिन शाह याक़ूब ने कहा कि ख़ुंदकार के सामने मेरी क्या मजाल है जो उन्हें तलक़ीन करूं। शाह नेमत रज़ी० ने फिर कहा कि बन्दा हज़रत महेदी अले० के हुक्म से कह रहा है, तब शाह याक़ूब रज़ी० ने दोनों को तलक़ीन की। दूसरे दिन शाह नेमत रज़ी० अपने दायरे को लौट आये। इन वाक़िआत से आप की शराफ़त और बुज़ुरगी का इज़्हार होता है।

बैरम गाँव में शाह नेमत रज़ी० के कुछ रिशतेदार मिलने आये। आप ने उनकी ख़ातिर तवाज़ू की। उन लोगौं ने कहा कि हम आप के रिश्तेदार हैं तो आप ने फ़र्माया कि तुम हमारे पिता मलिक बड़े के रिश्तेदार होंगे। मेरे रिश्तेदार तो यह फ़ुक़रा हैं जो तालिबे ख़ुदा हैं। मेहमानौं ने कहा कि हम भी तो महेदी अले० के मुसद्दिक़ हैं और तरके दुन्या करके दायरे में आयेंगे। आपने फ़र्माया कि उस समय हमारे रिश्तेदार होंगे लेकिन इस समय तो मलिक बड़े के रिश्तेदार हैं।

हज़रत के रिश्तेदारौं में से एक शख़्स दायरे में था और उसके वालिद मालदार (धनवान) थे। उन्होंने आप की दुख़तर के लिये अपने बेटे का पयाम भेजा। आप ने जवाब दिया कि में अपनी लड़की ऐसे शख़्स को दूंगा जिसका लिबास पेवंद भरा हो यानि तालिबे कामिल और मुतवक्किल हो। चुनांचे आपने अपनी लड़कियौं की शादी ऐसे फ़ुक़रा से की जो आप के हम-नसब (सगोत्र) नहीं थे। किसी ने ऐतराज़ किया तो आप ने फ़र्माया कि मुझे उनके नसब से ग़रज़ नहीं बल्कि उनके तक़वा से ग़रज़ है, और मैं ने इस आयत पर अमल किया है - *इन्न अक्रमकुम इन्दल्लाहि अल्क़ाकुम* (तुम में ख़ुदा के पास ज़ियादा इज़्ज़त वाला वह है जो ज़ियादा परहेज़गार है)। (अल-हुजुरात - 13)

किसी ने शाह नेमत रज़ी० से कहा कि लोग नये-न्ये आते हैं इसलिये बयाने क़ुरआन ज़रा नरमी और आहिसतगी से कीजिये। आप ने फ़र्माया कि बन्दा हज़रत महेदी अले० की सुहबत में रह चुका है तुम क्या सिखाते हो। तालिबे दुन्या बन्दे के पास आता है तो एक वार में दो टुकड़े कर देता हूँ अगर वह रहा तो उसके नसीब और अगर भाग गया तो बला गई। बन्दा किसी का ताबे नहीं है, सच्ची बात कह देना बन्दे का काम है।

दायरे की कुछ बीबियाँ जुमा के दिन मियाँ शाह नेमत रज़ी० के घर आईं। आप की पत्ना उनकी ताज़ीम (सम्मान) के लिये नहीं उठीं। आप को ख़बर मिली तो कारण पूछा। बीबी रज़ी० ने कहा कि उस समय बच्चे को दुध पिला रही थी। आप ने फ़र्माया कि ख़ुदा तआला इस बच्चे को उठालेगा। चुनांचे दूसरे सप्ताह में वह बच्चा चल बसा।

एक दिन शाह नेमत रज़ी० ने देखा कि मियाँ इब्राहीम एक बच्चे को कांधे पर दूसरे को गोद में और तीसरे को हाथ पकड़ कर ले जा रहे हैं। आप ने पूछा तो कहा कि इन बच्चौं को किसी को दे देने के लिये ले जा रहा हूँ ताकि इतमिनान से इबादत कर सकूं, क्योंकि उनका पालन-पोषण कठिन है। आप ने फ़र्माया कि तुम्हारा और उनका रज़्ज़ाक़ (अन्नदाता) ख़ुदा है, जाओ ख़ुदा के ज़िक्र में मशग़ूल हो जाओ, इन बच्चौं के सबब् से तुम्हारे दरजे बुलंद होंगे।

यह वाक़िआ उन लोगौं की हिदायत के लिये काफ़ी है जो तरके दुन्या की सूफ़ियाना इस्तलाह (पारिभाषिक शब्द) सुनते ही एतराज़ करते हैं कि यह रूहबानियत है। असल में तरके दुन्या का अर्थ दुन्या से प्रम को त्याग देना है। तारिके दुन्या मोमिन और राहिब में बहुत कुछ फ़र्क़ है। राहिब कभी विवाह नहीं करता जो कि ग़ैर फ़ित्री (अप्राक्रतिक) अमल है, जब कि तारिके दुन्या मोमिन इस्लामी शरीअत की मुकम्मल पैरवी करता है और मज़्हब और फ़ित्रत के तक़ाज़ौ के मुताबिक़ शादी भी करता है लेकिन वह धन दौलत और

परिवार को ही अपने जीवन का मक़सद नहीं समझता, बल्कि मताए दुन्या पर ख़ुदा की तलब को तरजीह (प्राथमिक्ता) देता है।

हुस्ने अख़्वलाक़ (सदव्यवहार)

शाह नेमत रज़ी० की यह आदत थी कि हर महीने को जब चाँद नज़र आता सब फ़ुक़रा जमा होकर एक दूसरे से बग़लगीर होते। इसका मक़सद यह था कि अगर किसी फ़क़ीर के दिल में किसी की तरफ़ से कुछ मैल आ गया हो तो दूर हो जाये।

मियाँ शाह नेमत रज़ी० ने अपने दायरे के बूढ़े फ़क़ीर के साथ सफ़र में यह सुलूक किया कि मुरशिद होने के बावजूद आधी मन्ज़िल आप सवार होते और आधी मन्ज़िल दायरे का फ़क़ीर सवार होता।

एक बार शाह नेमत रज़ी० एक जगह से दूसरी जगह दायरा बांधने के इरादे से निकले। दायरे के सब फ़ुक़रा बाहर निकल गये तो आप ने फ़र्माया कि जाओ दायरे में देखो कोई रह तो नहीं गया है। देखा तो एक बूढ़ी औरत पड़ी हुई है, आप उसको उठा लाए और अपने घोड़े पर बिठा कर ख़ुद पैदल चलते हुवे दूसरे दायरे तक लाये।

बयाने क़ुरआन के वक़्त कुछ मुख़ालफ़ीन टेढ़े सवालात किया करके थे लेकिन हज़रत महेदी अले० और आपके ख़ुलफ़ा तहम्मुल (सहनशीलता) से काम लेकर उनको समझाते थे। इसी तरह शाह नेमत रज़ी० से एक शख़्स बहस करने लगा। आप उसको समझाने लगे तो एक फ़क़ीर ने कहा कि बेकार क्यो सर खपाते हो। आपने फ़र्माया कि बन्दे का काम सर खपाना है। आप ने बहुत नरमी से उलको समझाया।

फ़ज़ाइल (श्रेष्ठता)

आप की सुहबत का असर देखिये कि जिस समय आप गुजरात से दकन जा रहे थे रास्ते में कुछ बेरोज़गार सिपाही मिले जो नौकरी की ख़ोज

में बुरहानपूर जा रहे थे। आप रज़ी० ने फ़र्माया कि हमारे पास नौकर हो जाओ। उन्हों ने तअज्जुब से कहा कि आप फ़क़ीर हैं हमें तनख़ाह (वेतन) कहाँ से दोगे। आप ने फ़र्माया कि तुम को इस से क्या मतलब है, हर रात अपना वेतन ले लिया करो, काम सिर्फ़ यही है कि हमारे साध रहो। यह सुनकर वह साथ हो गये और जब नमाज़ का समय आय तो दायरे वालों के साथ नमाज़ पढ़े और क़ुरआन का बयान सुना, फिर शाम में अपना वेतन ले लिया। दूसरे दिन भी यही हाल रहा लेकिन तीसरे दिन उनका मुक़द्दर चमक उठा और उन सब ने महेदी अले० की तस्दीक़ की और तरके दुन्या कर के तलक़ीन पाई। आख़िर में यह तालिबाने ख़ुदा लोहगढ़ में शाह नेमत रज़ी० के साथ शहीद होगये और गंजे शुहदा में दफ़न हैं।

जब शाह नेमत रज़ी० गुजरात से दक्कन की तरफ़ जा रहे थे तो दर्या गोदावरी में बाढ़ आई हुई थी लेकिन आप बिस्मिल्लाह कह कर पानी में उतर गये तो पानी पायाब (उथल) हो गया। पहले फ़ुक़राए किराम और उनके बाद आप ने दर्या को पार किया। बाज़ रिवायतौं में है कि आपने उंगली से इशारा किया तो पानी उथल हो गया।

फ़रमूदात

हज़रत बन्दगी मियाँ शाह नेमत रज़ी० ने फ़र्माया कि जिस ने ख़ुदा तआला की राह चुन लेने के बाद दुन्या को तलब किया तो वह मुर्तद (धर्म भ्रष्ट) है, उस पर लाज़िम है कि तौबा करे और उस काम को ख़ुद पर हराम जाने। आप ने फ़र्माया कि तौबा की शर्त ऐसी है कि जिस तरह गाये का दूध पिस्तान (स्तन) से बाहर निकलने के बाद वापस नहीं लौटाया जा सकता, तौबा उसी तरह करना चाहिये।

आप ने फ़र्माया कि नेक सुहबत उसको कहते हैं जो किसी का क़ौल और फ़ेल क़ुरआन शरीफ़ के ख़िलाफ़ देखे तो उसको मना करे और उस

मुआमले में रिआयत न करे। अगर ऐसा शख़्स न हो तो मुख़ालिफ़ के पास चला जाए ता कि सही रहबीर कर सके, यानि सच्चे दोस्त की पहचान आप ने बतलाई है।

मकतूब (लेख)

हज़रत शाह नेमत रज़ी० का फ़ारसी भाषा में एक मक्तूब है जिस में क़ुरआनी आयात, अहादीसे नबवी सल्ला० फ़रामीने महेदी अले०, फ़ारसी रूबाईयात हैं और जो वाज़-व-बयान का एक बेहतरीन नमूना है। उसको उर्दू तरजमा के साथ ''मकतूब हिदायत अस्लूब'' के नाम से दारुल इशाअत जमीअते महेदवियह हैदराबाद ने शाये किया है। हज़रत शाह नेमत रज़ी० ने हम्द-व-सना के बाद इसका मक़्सद यह बतलाया है कि हमेशा अपने मालिक और माअबूदे हक़ीक़ी की याद में मश्ग़ूल रहें और हर हाल में अल्लाह के अहकाम की ताअमील (पालन) करें। आप लिखते हैं कि दीन का रास्ता ऐसा नहीं है कि दुन्या की फ़राग़त, राहत और लज़्ज़त के साथ तुम दीन की राहत भी पा सकें, बल्कि यह ऐक वीराने का रास्ता है और इस रास्ते में हमेशा की राहत है, हक़ तआला ने अपने किसी दोस्त को दुन्या में राहत नहीं दी। आप लिखते हैं कि जब तक तू अपनी हस्ती के गुमान (भ्रम) से बाहर न आये और नेस्ती (अनस्तित्व) का यक़ीन हासिल न कर ले तो समझ ले कि तु गुनाह के कुंवे में क़ैद है फिर ईमान कहाँ, इस लिये तमाम गुमानौं को तर्क करदे ता कि अल्लाह तआला बख़श दें। जिस को यक़ीन नहीं उसको ईमान कहाँ है।

यही मकतूब ''रिसाला शौक़ ज़ौक़े सुलूक'' के नाम से 2000 ईसवी में अल-मुफ़्ती पब्लिकेशंस चनपटन ने दुबारा शाए किया है और पहला सने इशाअत 1910 बतलाया गया है। दोनों रिसालौं के मतन में किसी क़दर फ़र्क़ है।

परिवार

हज़रत बन्दगी मियाँ शाह नेमत रज़ी० की चार बी वियाँ और चार लड़कियाँ थी। मियाँ कबीर सजावंदी रज़ी०, शाह अब्दुल करीम नूरी रज़ी० और दसरे फ़ुकराय दायरा आप के दामाद थे।

ख़ुलफ़ा

आप के ख़ुलफ़ा में आप के भांजे मियाँ वली मुहम्मद रज़ी०, मियाँ कबीर सजावन्दी रज़ी०, मियाँ अब्दुल मोमिन सजावन्दी रज़ी०, मियाँ सय्यद बड़े रज़ी० और ''मख़ज़नुद-दलाइल'' के लेखक क़ाज़ी मुन्तजिबुद्दीन जुनेरी रज़ी० वग़ैरह शामिल हैं। ''इन्साफ़ नमा'' के लेखक मियाँ वली जी रज़ी० भी आप की सुहबत में रह चुके हैं।

शहादत

ज़िला पूणा में तले गाँव के पास क़िला लोह गढ़ के क़रीब शाह नेमत रज़ी० का दायरा था। उस ज़माने मं यह क़िला रियासत अहमदनगर की फ़ौजी छावनी और क़ैद ख़ाना के तौर पर इस्तेमाल होता था। लोह गढ़ का पहाड़ खंडाला घाट से मग़रिब की जानिब चार मील पर वाक़े है। क़िलेदार कफ़्शदार ख़ाँ महेदवियौं का दुश्मन था। चुनांचे 22 शाबान 935 हिज्री/1529 को फ़ुक़रा के हुज्रौं को आग लगा दी गई। शाह नेमत रज़ी० ने सब्र से काम लिया और एक मैदान में क़ियाम फ़र्माया। कुछ फ़ुक़रा हुज्रौं की ताअमीर के लिये लकड़ी घास वग़ैरा लाने के लिये जंगल गये हुवे थे। आप के साथ सोला या इकीस फ़ुक़रा मुसल्ले पर बैठे हुवे थे। शाम के वक़्त आप ने आसमान की तरफ़ देख कर मुसकुराया। फ़ुक़रा ने पूछा तो फ़र्माया कि आज आसमान मुनव्वर (प्रकाशमान) नज़र आ रहा है, हूर और मलक आ रहे हैं, देखें आज क्या ज़ाहिर होता है। चुनांचे इशा की नमाज़ के बाद रोज़मर्रा की तरह जब

तस्बीह कही गई तो क़िले में छिपी हुई फ़ौज ने अचानक हमला करके तमाम तालिबाने ख़ुदा को शहीद कर दिया। *इन्न लिल्लाही व इन्ना इलैही राजिऊन।*

एक और रिवायत यह है कि अहमदनगर पर मुग़लौं के हमले की वजह से शाही ज़नाना को लोह गढ़ मुन्तक़िल किया जा रहा था। क़िले के क़रीब शाह नेमत रज़ी० का दायरा था। हटो सरको की आवाज़े लगाइ गयीं और हमला करके शहीद कर दिया गया। अल्लाह ही बेहतर जानता है। अहमद नगार की तारीख़ (इतिहास) पढ़ने से पता चलता है कि 935/1529 में मुग़लौं ने नहीं बल्कि गुजरात के सुलतान बहादुर शाह ने अहमदनगर पर हमला किया था।

मज़ारे मुबारक

महाराष्ट्र में लोहगढ़ के ऊंचे पहाड़ौं के दामन में महा गांव के क़रीब आप का मज़ारे मुनारक है। एक बड़े चबूतरे पर चौखंडी है जिस में आप का एक ही मज़ारे मुबारक है और आप के क़दमौं में एक मज़ार है। कुछ साल पहले बेलगाम के जनाब याक़ूब चौधरी साहब की निगरानी में क़ौमी तआउन से रौज़ए मुबारक को संगे मर्मर से दुबारा तामीर करवाया गया है। इसके उत्तर में एक ऊंचा चबूतरा है जो गंजे शुहदा है। बाज़ू ही चश्मा बहता है और एक कुंवाँ भी है। जुनूब मश्रक़ी पहाड़ौं के बाहर एक आबादी है जिस का नाम काले कालोनी है। इस कालोनी से रोज़ए मुबारक तक पहुंचने के लिये अब कच्ची सड़क बिछादी गई है। रोज़ए मुबारक के पास एक पानी की टांकी है जिसे पूणा की जमात वालौं ने बनवाया है। जुनूब में एक ऊंचे टीले पर मस्जिद बनी हुवी थी जो नवाब मुहम्मद इब्राहीम खाँ साहब हैदराबादी ने बनवाई थी (अल - मुसद्दिक़ - 4/1342 हिज्री)। हाल ही मे हैदराबाद के जनाब इब्राहीम रसूल खाँ साहब ने उस क़दीम मस्जिद को शहीद करके नई मस्जिद तामीर करवाई है। हैदराबाद के जनाब सय्यद मुहम्मद आरिफ़ साहब मुक़ीम

अमेरिका ने पक्की तामीर के ज़रीए मस्जिद के सहेन की तौसी की है। हज़रत सय्यद मुनव्वर हुसेन बलख़ी मरहूम (हैदराबाद) ने मस्जिद के पीछे ज़नाना ज़ाइरीन के लिये एक टीन शेड बनवाया और यदुल्लाही ट्रस्ट ने तहारत ख़ाने तामीर करवाए। हज़रत शाह नेमत रज़ी० के अक़ीदत मंदौं बनाम ''ग़ुलामाने हज़रत शाह नेमत रज़ी०'' ने मस्जिद के मशरिक़ी जानिब एक और सायबान तामीर करवाया है और तक़रीबन् चार साल से उर्से मुबारक का इन्तेज़ाम भी कर रहे हैं। हज़रत सय्यद ख़ुंदमीर बाशा मियाँ साहब क़िबला सज्जादा दायरा मैंदरगी कई साल से बहरए आम के मौक़े पर नान रीज़ा तक़सीम कर रहे हैं। जनाब अब्दुर रज़्ज़ाक़ मुजावर कई साल से रौज़ए मुबारक की निगरानी करते आ रहे हैं और अब उनके फ़र्ज़न्द अब्दुर रहमान साहब भी दायरे के कामौं में हाथ बटा रहे है।

क़रीबी रेलवे स्टेशन कामशेट है। ट्रेन से जाने वाले यात्री पूणा पर उतर कर लोकल ट्रेन के ज़रीए कामशेट जा सकते हैं या लूनावाला पर उतर कर कामशेट आ सकते हैं। पूणा से मुम्बइ जाने वाली सड़क पर कामशेट से एक रास्ता बाईं जानिब निकलता है जो काले कालोनी जाता है। पूणा, शेलापूर औ दूसरे मक़ामात पर आप हज़रत नेमत बाबा रज़ी० के नाम से मश्हूर हैं। दूर-दूर से लोग यहाँ आते हैं और फ़ैज़ पाते हैं। रौज़ए मुबारक के पास दिल के सुकून मिलता है और आप का तवक्कुल याद आता है, क्यों न हो आप को इमामुना महेदी अले० की ज़ात में कामिल फ़ना हासिल थी और इमामुना अले० ने आप को फ़ानी फ़िल्लाह बाक़ी बिल्लाह होने की बशारत दी थी।

हवाशी

1) सुलतान महमूद बेगढ़ा का जन्म 849 हिज्री/1445 में हुवा और उसने लग-भग 54 साल यानि 863/1458 से 917/1511 तक गुजरात पर हुकूमत की। 2 रमज़ान 917/23 नवम्बर 1511 को वफ़ात पाई। (हिस्ट्री आफ़ गुजरात - कमिशरेट)। बेग़ढ़ा के माने गुजराती में दो क़िले हैं, चूंकि सुलतान महमूद ने राजपूतौं के दो क़िले गिरनार 1469 में और चम्पानीर 1484 में फ़तह किये थे इस लिये उसको बेग्ग़ढ़ा कहा जता है। उसी के दौर में पुरतुगालियौं ने पहली बार भारत में क़दम रखा।

2) राजपूतौं के दौरे हुकूमत में पटन को अन्हिलवाड़ा कहा जाता था और मुस्लिम दौरे हुकूमत में नहरवाला। पटन गुजरात की राजधानी था लेकिन शहर अहमदाबाद की तामीर के बाद सुलतान अहमद शाह ने पटन को छोड़ कर अहमदाबाद को अपनी राजधानी बनाया।

3) नसरपूर हैदराबाद सिधं में तांडो ताआल्लुक़ा का शहर है। (इम्पीरियल गज़ीटियर आफ़ इन्डिया 1908)। काहा में ही इमामुना अले० ने अल्लाह के हुक्म से दुगाना लैलतुल क़द्र जमाअत के साथ अदा फ़र्माया था।

4) शवहिदुल विलायत - सफ़हा 267 5) मौलूद - 100

6) मौलूद - 91 7) नक़लियात मियाँ सय्यद आलम - 76

8) सुलतान मुज़फ़्फ़र शाह सानी के दौरे हुकूमत 917-931/1526 में महेदवियौं पर ज़ुलम किया गया। बन्दगीं मियाँ शाह ख़ुंदमीर रज़ी० की शहादत भी उसी के हुक्म से हुवी।। (हिस्ट्री आफ़ गुजरात - कमिशरेट - 150)

9) सुलतान बहादुर शाह महमूद बेग़ढ़ा का पोता था। दौरे हुकूमत 1526-1537। पुरतुगालियौं ने उस को देव की बन्दरगाह में धोके से क़त्ल कर दिया।

10) अहमदनगर का बानी मलिक अहमद, निज़ामुल मुल्क बहरी का बेटा था। 1490 में उस ने बहमनी सलतनत से अलग होकर अहमदनगर में हुकूमत क़ाइम की। 1499 में दौलताबाद पर क़बज़ा किया, और 1508 मे वफ़ात पाई। उसके बेटे बुरहान निज़ामशाह ने 1508 से 1553 तक 45 साल हुकूमत की।

11),13) मुन्तख़बुल - लुबाब - हाशिम खाँ

12) ज़िला पूणा का ताअल्लुका जो लूनावाला और तलेगाँव के अलावा 163 गाँव पर मुश्तमिल था (इम्पीरियल ग़ज़ीदियर आफ़ इन्डिया)

गुज़ारिश

तमाम ज़ाइरीन हज़रत बन्दगी मियाँ शाह नेमत रज़ी०
से अदबन् गुज़ारिश है कि दायरा और मस्जिद के इहाते
में साफ़ सफ़ाइ का ख़ास ख़याल रखें और बावली में खाने
की चीज़ें न फेंकें।

ग़ुलमाने हज़रत शाहे नेमत रज़ी०
जनाब शेख़ चाँद साजिद साहब के बेहद
शुक्र गुज़ार हैं कि उन्हों ने बड़ी मेहनत से यह
रिसाला मुरत्तब किया है

Printed at :
SM PRINTERS, Beside Jamal Market, Gate,
Chatta Bazar, Hyderabad.2.(A.P.) INDIA